# गांधी कौन थे?

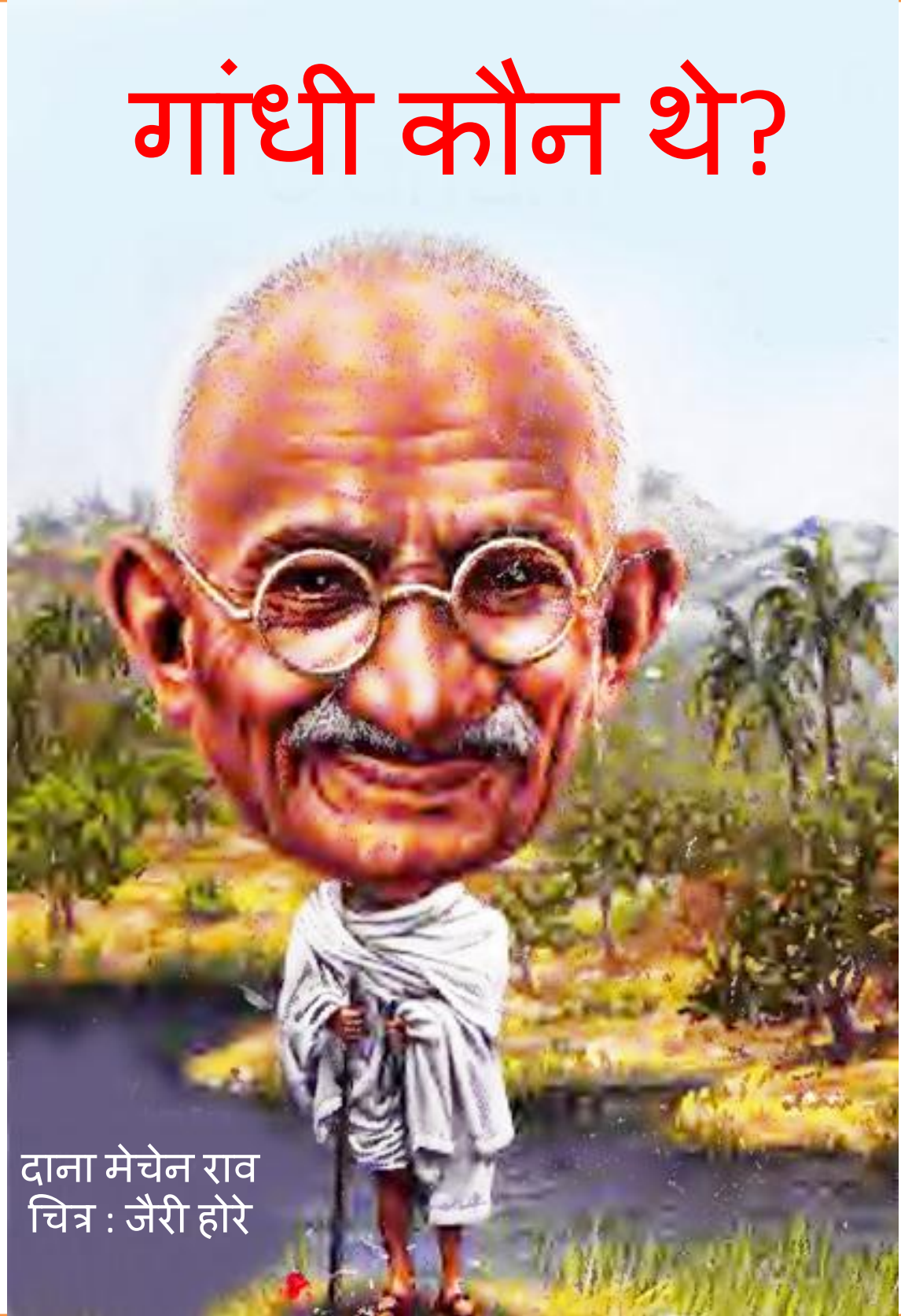

दाना मेचेन राव
चित्र : जैरी होरे

# गांधी कौन थे?

# विषयसूची

गांधी कौन थे?
बाल दूल्हे
लंदन वकील
एक अवांछित आगंतुक
सत्य का बल
भारत में महात्मा
अहिंसक असहयोग
भारत छोड़ो
एक रोशनी चली गई
गांधी के जीवन की समयरेखा

# गांधी कौन थे?

12 मार्च, 1930 को, साठ वर्षीय मोहनदास गांधी अहमदाबाद, भारत में अपने घर से 78 पुरुषों और महिलाओं के साथ बाहर निकले. वे घुमावदार, धूल भरी सड़कों पर 240 मील चले. पश्चिमी तट पर बसे दांडी शहर तक पहुंचने में उन्हें चौबीस दिन लगे. गांधी ने पूरे रास्ते ग्रामीणों के साथ बात की. यात्रा के अंत तक कई हजार लोग उनके साथ जुड़ चुके थे.

जब मार्च करने वाले दांडी पहुंचे, तो उन्होंने प्रार्थना की. अगली सुबह, 6 अप्रैल, अरब सागर के तट पर, गांधी ने मिट्टी से नमक की एक गांठ उठाई. ऐसा करके उन्होंने ब्रिटिश नमक का कानून तोड़ा. यह शांतिपूर्ण कार्य शक्तिशाली था. इसने लाखों भारतीयों को अनुचित नमक अधिनियम कानूनों के खिलाफ एकजुट किया. नमक अधिनियमों के अनुसार भारतीय लोग खुद नमक इकट्ठा, बना या बेच नहीं सकते थे.

इसके बजाए उन्हें अंग्रेजों से नमक खरीदना पड़ा, जिन्होंने 1858 से 1947 तक भारत पर शासन किया था. भारतीय घरों में भोजन के स्वाद के लिए नमक एक बुनियादी जरूरत थी. गांधी की छोटी लेकिन बहादुरी की इस कार्रवाई के बाद, पूरे देश में भारतीयों ने नमक इकट्ठा करना और बेचना शुरू कर दिया. गांधी की नमक यात्रा ने भारत को, ब्रिटिश शासन से आजाद होने की राह पर अग्रसर किया.

मोहनदास गांधी ने भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी. लेकिन उन्होंने हथियारों से लड़ाई नहीं लड़ी. उनके अनुसार शब्द और सकारात्मक कार्य, हिंसा से अधिक शक्तिशाली थे. उनका एक सरल संदेश था - प्रेम और दूसरों की देखभाल के ज़रिए सत्य की खोज करना. लोग उन्हें महात्मा कहते थे, जिसका अर्थ था "महान आत्मा."

# अध्याय 1
# बाल दूल्हे

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, भारत में हुआ था. पोरबंदर, देश के पश्चिमी तट पर बसा एक छोटा सा राज्य था. मोहनदास, जिन्हें उनका परिवार मोहन बुलाता था, अपने माता-पिता, अपनी दो सौतेली बहनों, सबसे बड़े भाई लक्ष्मीदास, बहन रालियतबेन और भाई करसनदास के साथ बड़े हुए. मोहन, घर में सबसे छोटे थे.

उनके पिता, करमचंद, पोरबंदर के दीवान, यानि राजनीतिक नेता थे. मोहन का परिवार, नौकरों के साथ तीन मंजिले एक बड़े घर में रहता था.

मोहन गहरी हिंदू परंपराओं वाले देश में पले-बढ़े. उनकी मां, पुतलीबाई, विशेष रूप से धार्मिक थीं. वो प्रतिदिन पूजा के लिए मंदिर जाती थीं. वो भोजन से पहले प्रार्थना करती थीं. कभी-कभी वो भगवान के प्रति अपनी भक्ति दिखाने के लिए उपवास करती थीं. बरसात के मौसम में चार महीने की एक अवधि के दौरान, पुतलीबाई ने कहा कि वो तब तक नहीं खाएंगी जब तक कि सूरज नहीं निकलेगा.

गांधी ने बाद में कहा, "उन दिनों हम बच्चे खड़े होकर, आकाश की ओर देखते थे और अपनी माँ को सूर्य के प्रकट होने की घोषणा देने की प्रतीक्षा करते थे." माँ की भक्ति ने नन्हे मोहन पर एक बड़ी छाप छोड़ी. उन्होंने उन्हें एक संत के रूप में देखा.

जब मोहन सात साल का हुआ, तो उसका परिवार पोरबंदर से राजकोट शहर में चला गया. स्कूल में, मोहन एक औसत छात्र था और बेहद शर्मीला था. "मेरी किताबें और मेरे पाठ ही मेरे एकमात्र साथी थे," उन्होंने कहा.

स्कूल खत्म होते ही वो घर चला जाता था. वो नहीं चाहता था कि उसे किसी से बात करनी पड़े या कोई उसका मजाक उड़ाए. मोहन बचपन में और यहां तक कि वयस्कता में भी काफी डरपोक था. वह चोरों, सांपों, भूतों और विशेष रूप से अंधेरे से डरता था.

हिंदू माता-पिता अपने बच्चों की शादी जल्द ही पक्की कर देते थे. जब मोहन केवल सात वर्ष का था, तब उसके माता-पिता ने उसकी शादी एक लड़की से पक्की कर दी. कस्तूरबा, मोहन की ही उम्र की थी. वह पोरबंदर के एक व्यापारी की बेटी थी जो मोहन के पिता के अच्छे दोस्त थे. जब मोहन और कस्तूरबा तेरह वर्ष के हुए, तो उनका विवाह हो गया.

बाद में जीवन में, गांधी बाल-विवाह के विचार के खिलाफ बहुत मुखर होकर बोले. उन्होंने लिखा, "मैं इस तरह के बेतुके जल्दी विवाह के समर्थन में कोई नैतिक तर्क नहीं दे सकता." लेकिन गांधी ने कम उम्र में ही अपनी शादी का आनंद लिया.

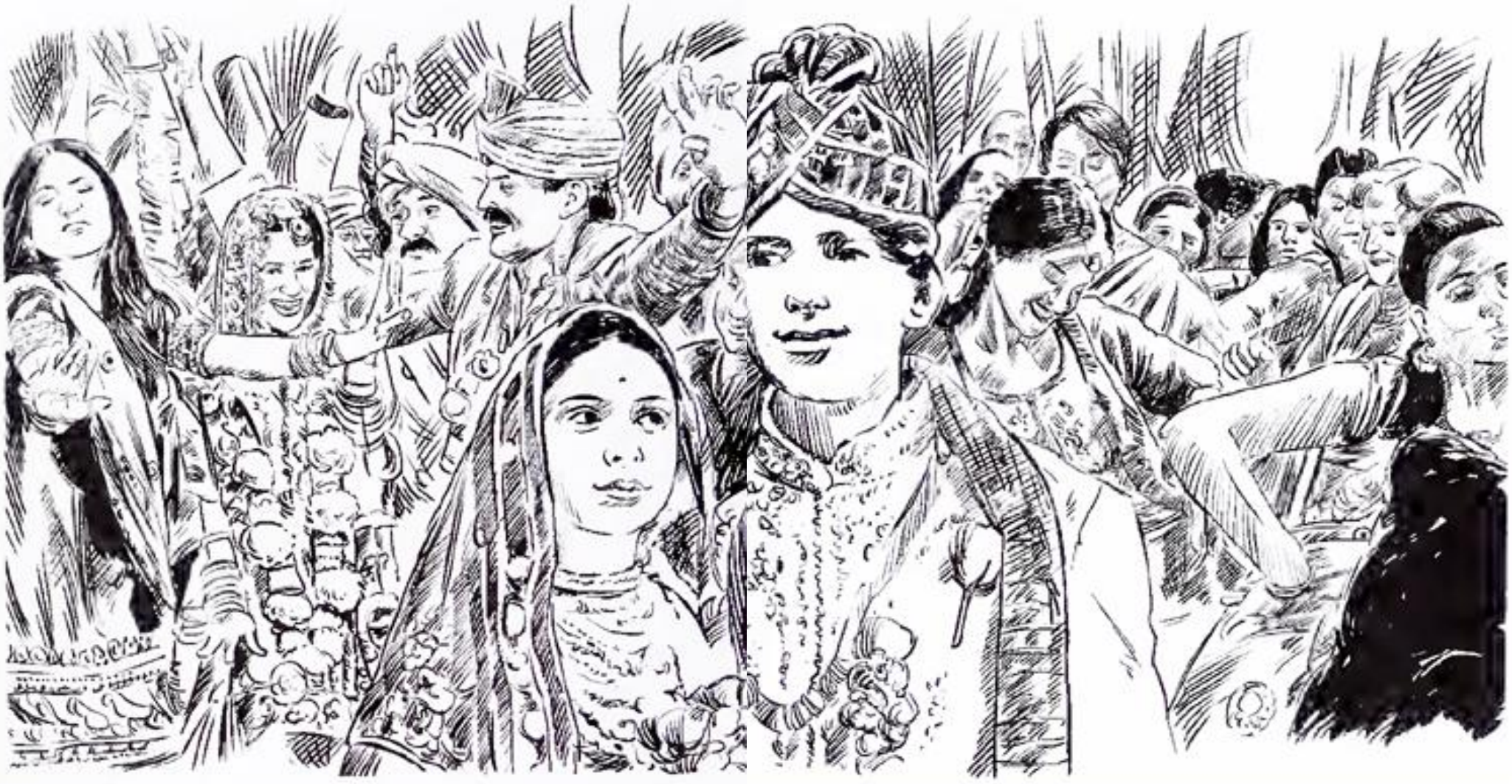

"उस दिन सब कुछ मुझे सही और उचित और अच्छा लगा," उन्होंने कहा. शादी में कई मेहमानों के साथ बैंड-बाजा और उत्सव जैसा माहौल था.

दूल्हा-दुल्हन ने एक-दूसरे को काफी पसंद किया. लेकिन फिर भी उनकी शादी आसान नहीं थी.

मोहन और कस्तूरबा को, पति-पत्नी कैसे बनना है यह अभी सीखना था. शादी की तैयारी और वैवाहिक जीवन ने मोहन की पढ़ाई में बाधा डाली. स्कूल वापिस लौटने से पहले उन्हें एक साल की छुट्टी लेनी पड़ी.

# भारत में धर्म

हिंदू धर्म भारत के लोगों और वहां की संस्कृति से पूरी तरह से जुड़ा हुआ है. हिंदू धर्म के विश्वास और परम्पराएं किसी एक भगवान या पैगंबर को गले नहीं लगातीं हैं. वो एक सार्वभौमिक आत्मा में विश्वास करते हैं जिसे ब्रह्म कहा जाता है, जो कई अलग-अलग देवी-देवताओं का रूप ले सकता है. हिंदू धर्म कई संप्रदायों और उपसमूहों में विभाजित है, जिनमें से वैष्णववाद और शैववाद सबसे बड़े और सबसे लोकप्रिय हैं. गांधी के परिवार के सदस्य वैष्णव हिंदू थे. वे भगवान विष्णु की पूजा करते थे.

गांधी के समय में, भारत की लगभग एक चौथाई आबादी इस्लाम धर्म को मानती थी. इस्लाम को मानने वाले एक ईश्वर, अल्लाह में विश्वास करते हैं. इस धर्म के अनुयायी मुसलमान कहलाते हैं और वे पैगंबर मुहम्मद की सीख का अध्ययन करते हैं. भारत में अधिकांश मुसलमान 1947 में, पाकिस्तान के निर्माण तक, देश के उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम में रहते थे.

हाई स्कूल में, मोहन को अपने शिक्षकों को प्रसन्न करना अच्छा लगता था. स्कूल के बाहर भी वो अच्छे काम करने की कोशिश करता था. लेकिन एक दोस्त ने उसे उसकी मान्यताओं के खिलाफ ले जाने की कोशिश की. मोहन और उनका परिवार शाकाहारी था. मित्र ने मोहन से कहा कि मांस खाने से वह ताकतवर हो जाएगा और उसे अपने डर पर काबू पाने में मदद मिलेगी. फिर मोहन नदी के किनारे अपने दोस्त से मिला और पहली बार उसने मांस खाने का प्रयास किया. वो बीमार पड़ गया. उसे बुरे-बुरे सपने आए. लेकिन उसने करीब एक साल तक मांस खाना जारी रखा. उसे अपने परिवार से झूठ बोलना पसंद नहीं था. अंत में मोहन ने महसूस किया कि वो दोस्त और मांस उसके लिए अच्छा नहीं थे.

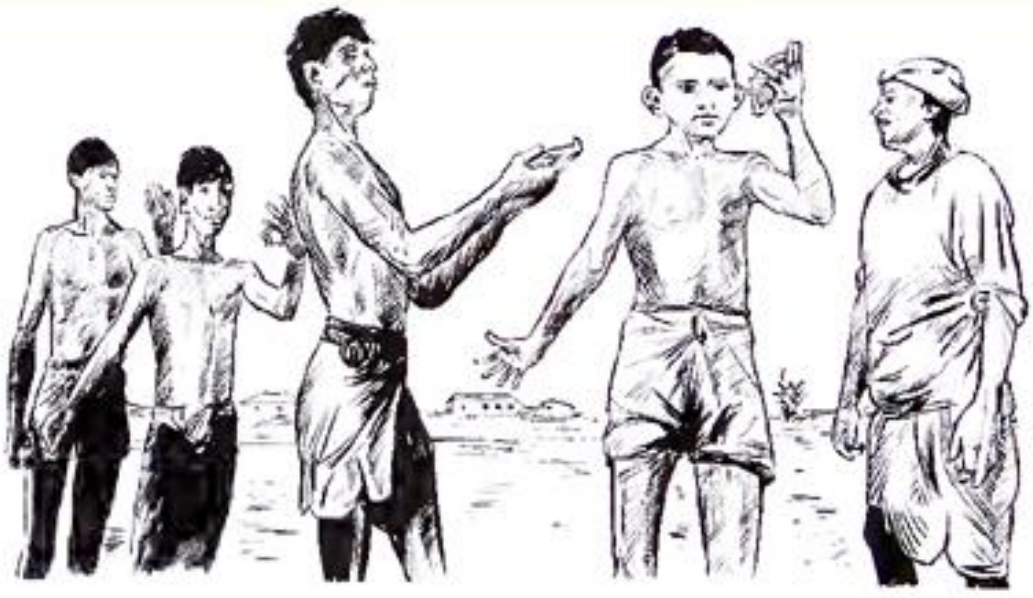

एक युवा के रूप में, मोहन पर कई जिम्मेदारियां थीं. जब वो स्कूल में नहीं होता था तो वो अपने बीमार पिता की देखभाल करता था. जब मोहन केवल सोलह साल का था, तब उसके पिता की मृत्यु हो गई. अधिक दुख तब हुआ जब मोहन और कस्तूरबा के पहले बच्चे का, कुछ ही दिनों बाद निधन हो गया.

1887 में, मोहन ने हाई स्कूल पूरा किया. उसने कॉलेज जाने की कोशिश की, लेकिन वहां के लेक्चर उसे उबाऊ लगे.

उसे लगा कि अभी वो कॉलेज के लिए तैयार नहीं था. एक सेमेस्टर पढ़ने के बाद ही वो घर वापिस आ गया.

एक पारिवारिक मित्र ने मोहन को इंग्लैंड जाने का सुझाव दिया. उन्होंने कहा कि मोहन के लिए इंग्लैंड में वकील बनना आसान होगा. कानून की पढ़ाई करने के बाद वो अपने पिता की तरह ही दीवान बन सकता था. मोहन उसके लिए राजी हो गया.

उस समय राजकोट के किसी युवक के लिए शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाना आम बात नहीं थी. गांधी हमेशा की तरह शर्मीले और डरपोक थे. अब वो घर से दूर एक नए रोमांच की यात्रा पर थे.

## ब्रिटिश राज

1600 में, ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) की स्थापना ईस्ट इंडीज में लंदन के व्यापारियों द्वारा की गई थी. EIC ने प्लासी की लड़ाई में बंगाल सैनिकों और उनके फ्रांसीसी सहयोगियों को हराकर भारत का राजनीतिक शासन संभाला.

1857 में, भारतीय सैनिकों ने EIC के खिलाफ विद्रोह किया. विद्रोह की पराजय के बाद, अंग्रेजों ने देश पर नियंत्रण कर लिया. भारतीय राजघराने अभी भी अपने स्थानीय क्षेत्रों के लिए कुछ कानून बना सकते थे. लेकिन ब्रिटिश वायसराय ने लगभग सौ साल तक पूरे ब्रिटिश भारत पर राज किया. कई भारतीय समानता चाहते थे और वे ब्रिटिश शासन से असंतुष्ट थे. अंततः 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ.

# अध्याय 2
# लंदन में वकील

मोहनदास गांधी ने अपना सामान बांधा और कस्तूरबा और अपने नए बेटे, हरिलाल सहित अपने पूरे परिवार को अलविदा कहा. फिर वो बम्बई के लिए रवाना हुए, जहां से उन्हें लंदन, इंग्लैंड के लिए जहाज पकड़ना था.

बंबई छोड़ने से पहले, मोठ बनिया जाति के नेताओं ने गांधी को एक बैठक में बुलाया. विदेश यात्रा करना उनकी जाति के नियमों के विरुद्ध था. वे सोचते थे कि इंग्लैंड में रहते हुए गांधी को हिंदू धर्म के नियमों को तोड़ने का प्रलोभन मिलेगा.

यदि वो विदेश जाते तो उसे मोठ बनिया जाति से निकाल दिया जाता और उन्हें अछूत समझा जाता. गांधी हिम्मत करके फिर भी चले गए. जब वो 4 सितंबर, 1888 को बंबई से रवाना हुए तो वो केवल अठारह वर्ष के थे.

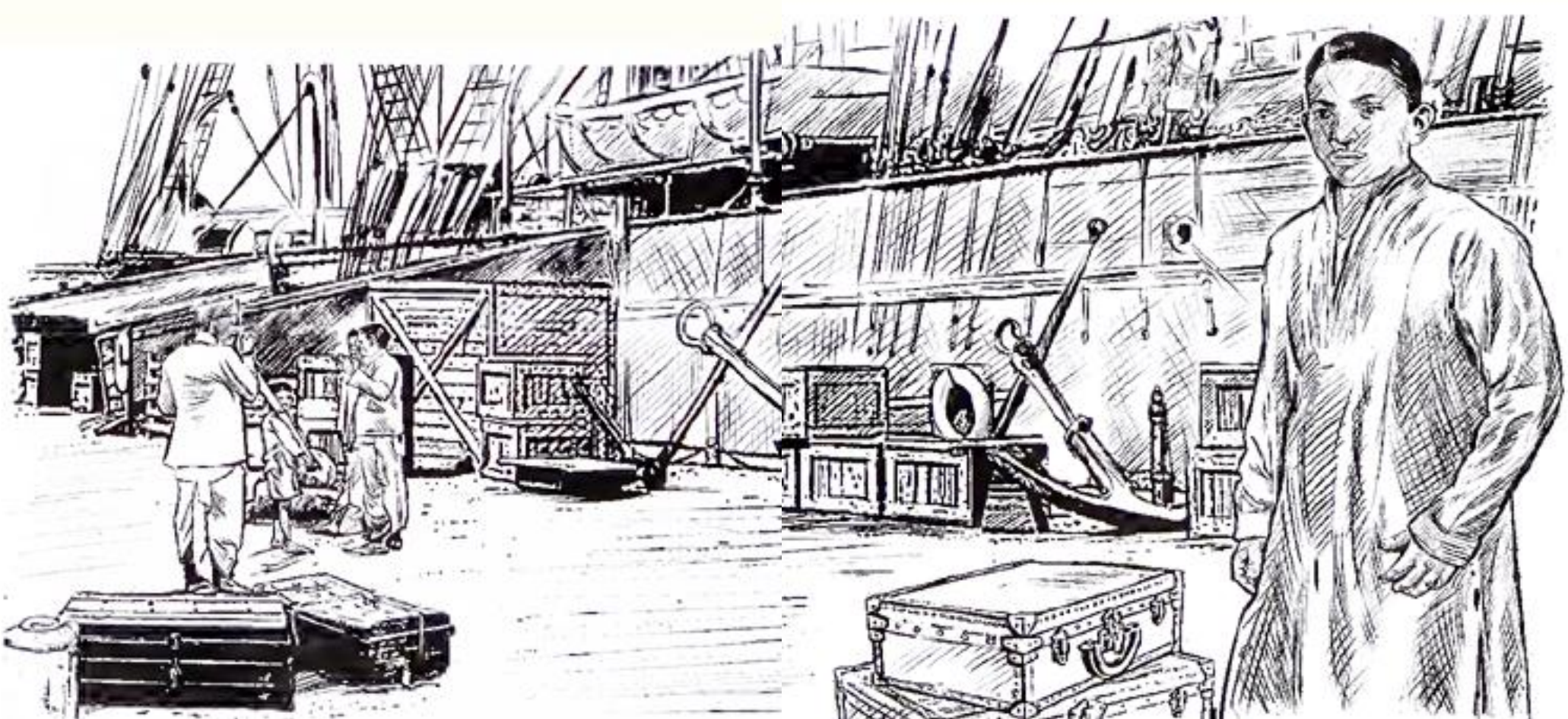

गांधी के लिए नए देश के अनुरूप खुद को ढालना और उसमें फिट होना कठिन था. "वहां सब कुछ अजीब था - लोग, उनके तरीके और यहां तक कि उनके घर भी," उन्होंने बाद में लिखा. उन्होंने "अंग्रेजी सज्जन" (इंग्लिश जेंटलमैन) बनने की बहुत कोशिश की. उन्होंने नया सूट, टोपी, चांदी के नोक वाला बेंत और चमड़े के दस्तानों पर काफी पैसा खर्च किया.

उन्होंने अन्य अंग्रेजों की तरह शिष्टाचार, नृत्य, फ्रेंच और वायलिन सीखने की कोशिश की. लेकिन इनमें से किसी ने भी उनके अकेलेपन और घर की याद को कम नहीं किया.

लंदन में गांधी को सही भोजन मिलना कठिन था. भारत छोड़ने से पहले उन्होंने अपनी मां से वादा किया था कि वो विदेश में मांस नहीं खाएंगे. लेकिन लंदन में शाकाहारी भोजन मिलना बहुत मुश्किल था.

चूँकि गांधी शर्मीले थे, उन्होंने अपने मेजबानों या वेटरों से भोजन के अन्य विकल्प नहीं पूछे. घर के मसालों के बिना उन्हें सब्जियां फीकी और बेस्वाद लगती थीं.

# भारत में जाति व्यवस्था

पारंपरिक हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति ने लोगों को अलग-अलग सामाजिक गुटों या जातियाँ में विभाजित किया था.

धार्मिक पुजारियों और शिक्षकों की उच्चतम जाति को ब्राह्मण कहा गया. इसके बाद क्षत्रिय - योद्धा और राजशाही लोग थे. गांधी का परिवार उससे निचली जाति - वैश्य थे. गाँधी मोठ बनिया नामक एक छोटे उपसमूह के सदस्य थे. वैश्य जाति में जमींदार, व्यापारी और किसान शामिल थे. शूद्र, निम्नतम जाति स्तर पर थे. वे मजदूर और शिल्पकार थे. लोग अपनी जाति से बाहर के सदस्यों से शादी नहीं कर सकते थे. उन्हें जाति से बाहर भोजन करने की भी अनुमति नहीं थी!

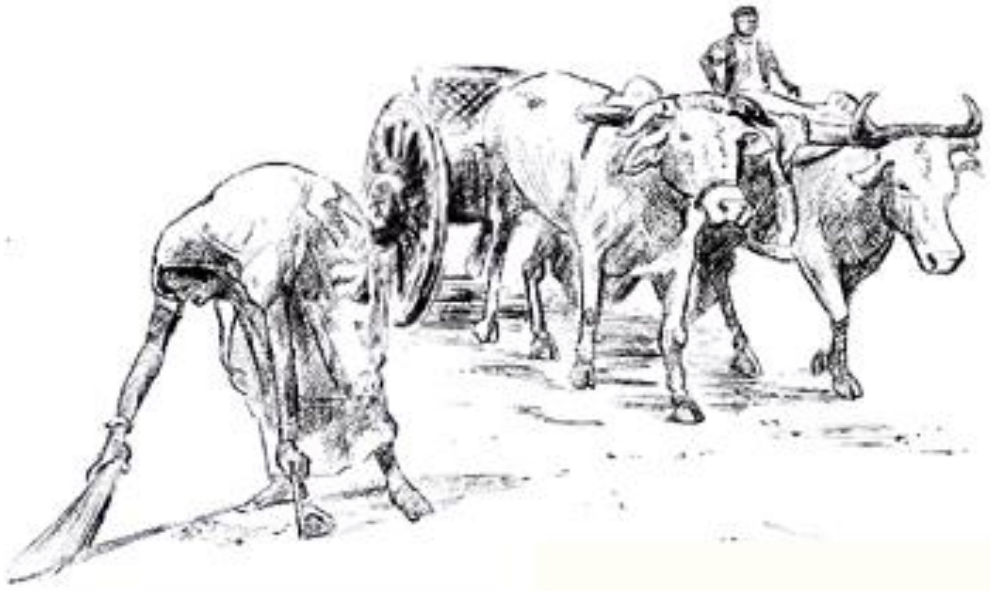

लोगों के एक समूह को इतना नीचा समझा जाता था, कि वे जाति व्यवस्था से बाहर थे. उन्हें अछूत कहा जाता था. अछूत सबसे गंदे काम करते थे, जैसे कि सड़कों की सफाई, पखानों की सफाई, और कचरा उठाने का काम. 1950 में, अछूतों को कानून के तहत समान अधिकार दिए गए थे. आज दलित शब्द उन लोगों को दर्शाता है जिन्हें कभी अछूत कहा जाता था. जाति व्यवस्था अब आधुनिक भारत में रोजमर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा नहीं है. वैसे दलितों के खिलाफ भेदभाव कानून के खिलाफ है, फिर भी कई लोगों को खासकर ग्रामीण इलाकों में इन पूर्वाग्रहों और अन्याय का सामना करना पड़ता है.

गांधी, लंदन शहर में लंबी सैर करते थे. एक सैर में उन्हें फ़ारिंगडन स्ट्रीट पर एक शाकाहारी रेस्तरां दिखाई दिया. गांधी को आखिरकार खाने के लिए जगह अच्छी जगह मिली. इस खोज ने उन्हें लंदन में शाकाहारियों के एक पूरे समुदाय से भी परिचित कराया. फिर गाँधी लंदन वेजिटेरियन सोसाइटी के सदस्य बने.

गांधी ने यूनिवर्सिटी कॉलेज में अपनी पढ़ाई पूरी की और 10 जून, 1891 को कानून की परीक्षा पास की. लंदन वेजिटेरियन सोसाइटी ने उनके सम्मान में विदाई भोज आयोजित किया. गांधी ने बोलने के लिए एक भाषण तैयार किया था, लेकिन वे इतने शर्मीले और घबराए हुए थे कि वे उसे पढ़ नहीं पाए. वो केवल असहज तरीके से "धन्यवाद" दे पाए .

दो दिन बाद, वो भारत के लिए रवाना हुए. वो केवल तीन साल के लिए लंदन में रहे थे. लेकिन वहां उन्होंने कानून के बारे में और अपने बारे में जो सबक सीखे, वे बाद में उन्हें एक आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता के रूप में बहुत आगे ले गए.

# अध्याय 3
# एक अवांछित आगंतुक

गांधी भारत लौट आए. बंबई बंदरगाह के ज़ोरदार पानी ने उनका स्वागत किया. गांधी के बड़े भाई लक्ष्मीदास उन्हें लेने आये थे. उन्होंने मोहनदास को एक दुखद समाचार सुनाया. गांधी के इंग्लैंड प्रवास के दौरान उनकी मां की मृत्यु हो गई थी.

गांधी के लिए घर वापस आना आसान नहीं था. उनकी जाति उन्हें स्वीकार नहीं करती. अपने भाई को खुश करने के लिए, गांधी, इंग्लैंड के पापों को धोने के लिए पवित्र गोदावरी नदी में स्नान करने के लिए सहमत हुए.

फिर उन्हें उनकी जाति में वापिस आने दिया गया. लेकिन उनका गृहस्थ जीवन कस्तूरबा के साथ विवादों से भरा रहा. गांधीजी ने कस्तूरबा को खाना पकाने, खाने और कपड़े पहनने की अपनी नई अंग्रेजी परम्पराएं सिखाने की कोशिश की.

गांधी, बंबई में काम की तलाश में गए. लेकिन जल्द ही उन्होंने पाया कि वो वकालत के पेशे के लिए बहुत शर्मीले थे. जैसे ही गाँधी अदालत में अपना पहला मामला पेश करने के लिए खड़े हुए, "मेरा सिर घूमने लगा, और मुझे लगा जैसे पूरी अदालत भी गोल घूम रही हो." उन्होंने राजकोट में एक ऑफिस स्थापित किया जहां वे अदालत के बजाए अपनी डेस्क पर काम करते थे.

फिर गांधी को एक अच्छी खबर मिली. पोरबंदर का एक व्यापारी दक्षिण अफ्रीका में रहता था. उन्हें वहां पर एक कोर्ट केस के लिए एक वकील की जरूरत थी. नौकरी एक साल की थी. गांधी ने उस नौकरी को आजमाने का फैसला किया. हालाँकि हाल ही में उनकी पत्नी ने मणिलाल नाम के एक नए बेटे को जन्म दिया था. गांधी ने अपनी पत्नी और दो छोटे बेटों को लक्ष्मीदास की देखरेख में छोड़ दिया और अप्रैल 1893 में डरबन, दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हुए.

दक्षिण अफ्रीका पहुंचने के एक हफ्ते बाद, गांधी अपने कोर्ट केस के लिए प्रिटोरिया गए. उनके पास ट्रेन में प्रथम श्रेणी का टिकट था. यात्रा के दौरान शाम करीब नौ बजे ट्रेन मैरिजबर्ग स्टेशन पर रुकी. एक यूरोपीय व्यक्ति डिब्बे में घुसा.

एक भारतीय व्यक्ति को प्रथम श्रेणी के डिब्बे में देखना उसे पसंद नहीं आया. वो आदमी चला गया और फिर एक रेलवे अधिकारी के साथ वापस आया. अधिकारी ने गांधी को तीसरी श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करने का आदेश दिया.

गांधी ने उन्हें अपना टिकट दिखाया. गांधी ने प्रथम श्रेणी का डिब्बा छोड़ने से इनकार कर दिया.

यूरोपीय आदमी फिर से चला गया और एक पुलिसकर्मी के साथ वापस आया, जिसने तुरंत गांधी को ट्रेन से लात मारकर बाहर फेंक किया. ट्रेन के रुकते ही गांधी मरिट्जबर्ग स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर अकेले पड़े थे.

प्रिटोरिया की बाकी यात्रा ज्यादा बेहतर नहीं रही. घोड़ागाड़ी में गोरे यात्री नहीं चाहते थे कि उनके साथ कोच में कोई भारतीय हो. कोचवान ने गांधी को फुटबोर्ड पर बैठने के लिए कहा - उस छोटे पायदान पर जिसपर लोग कदम रखकर अंदर चढ़ते थे. गांधी ने लिखा, "मैं जितना अपमान सह सकता था, मैंने उससे कहीं अधिक अपमान सहा."

जब गांधी अंततः प्रिटोरिया पहुंचे, तो उन्होंने भारतीय समुदाय की एक बैठक बुलाई. अब गाँधी डरपोक नहीं रह सकते थे. "इस बैठक में मेरे भाषण को मेरे जीवन का पहला सार्वजनिक भाषण कहा जा सकता है," उन्होंने कहा.

## इतने सारे भारतीय दक्षिण अफ्रीका में क्यों थे?

जब गांधी युवा थे, तब ब्रिटिश और डच दोनों का दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न हिस्सों पर शासन था. केप कॉलोनी और नेटाल ब्रिटिश उपनिवेश थे. डच बसने वाले (बोअर्स) ने ट्रान्सवाल और ऑरेंज मुक्त राज्य के क्षेत्रों को नियंत्रित किया था. 1860 के दशक में, कई भारतीय, चीनी और कॉफी बागानों पर काम करने के लिए नेटाल आए थे. अधिक भारतीय आए और उन्होंने व्यापारियों और मज़दूरों जैसे काम किया. भारतियों का आना अंग्रेज़ों को अपने कारोबार के लिए एक खतरा लगा. 1894 तक नेटाल में, भारतीयों की संख्या 43,000 थी जो गोरों की संख्या 40,000 से अधिक थी.

इसलिए भारतीय जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए, अंग्रेजों ने ऐसे कानून पारित किए जिसने उनकी समानता और अधिकारों को सीमित किया.

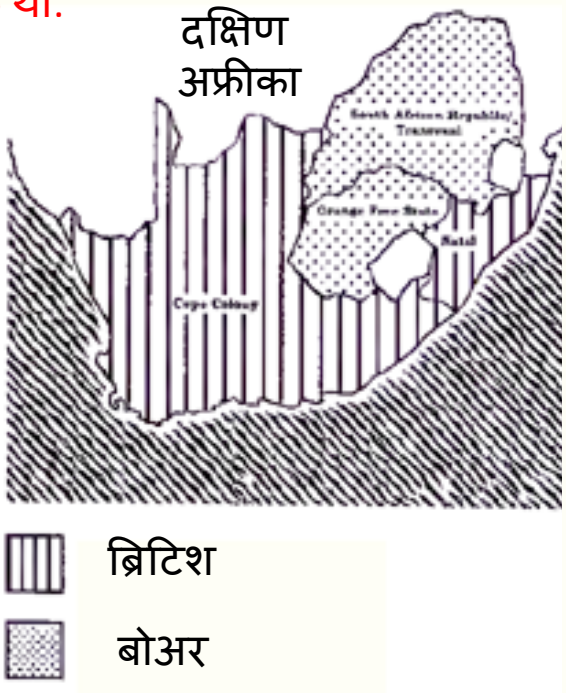


गांधी ने भारतीय समुदाय के साथ अपने विचार साझा किए कि वे कैसे अपना जीवन को बेहतर बना सकते थे. उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ उचित व्यवहार की आवश्यकता के बारे में चर्चा की. गाँधी खुद भारत वापस जा सकते थे या फिर वो दक्षिण अफ्रीका में अपने अधिकारों और भारतीयों के अधिकारों के लिए खड़े हो सकते थे. इसलिए गाँधी ने वहीं रहने का फैसला किया.

# अध्याय 4
# सत्य बल

जब उन्होंने प्रिटोरिया में अदालती मामला पूरा किया, तो गांधी को लगा कि उनका वहां अभी भी एक काम बकाया था. गांधी ने लिखा, "इस प्रकार भगवान ने दक्षिण अफ्रीका में मेरे जीवन की नींव रखी और राष्ट्रीय स्वाभिमान की लड़ाई का बीज बोया." 1894 में, गांधी ने नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की ताकि भारतीयों को सरकार में शामिल किया जा सके. गांधी अब भारतीय समुदाय के एक नेता बन रहे थे.

दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेशों और क्षेत्रों में भारतीय लोगों के बहुत कम अधिकार थे.

उन्हें अतिरिक्त टैक्स देना पड़ा. वे सार्वजनिक फुटपाथों पर नहीं चल सकते थे. वे रात नौ बजे के बाद बिना परमिट के बाहर नहीं जा सकते थे. वहां कानूनी विवाह केवल ईसाइयों के बीच होते थे, इसलिए भारतीयों के स्वयं के विवाह को अमान्य माना जाता था. उन्हें अपने नेताओं को वोट देने की अनुमति नहीं थी.

गांधी को उस रात की बात याद आई जब एक पुलिस अधिकारी ने उन्हें फुटपाथ से धक्का दे दिया था: "एक बार, इन लोगों में से एक ने थोड़ी सी भी चेतावनी दिए बिना, मुझे फुटपाथ से धक्का दिया था और मुझे सड़क पर लात मारी थी."

1896 में, तीन साल विदेश में रहने के बाद, गांधी भारत लौटे. लेकिन नेटाल में भारतीयों के साथ अपना महत्वपूर्ण काम छोड़ना उनके लिए आसान नहीं था. नेटाल कांग्रेस उनका समर्थन कर रही थी.

लेकिन गांधी चाहते थे कि उनका परिवार उनके साथ दक्षिण अफ्रीका जाए. इसलिए कस्तूरबा, एक भतीजा, और उसके दो बेटे, जिनकी उम्र अब नौ और पांच वर्ष थी, ने गाँधी के साथ वापसी की यात्रा की.

एक बार जब वे नेटाल पहुंचे, तो गांधी ने जोर दिया कि उनका परिवार असहज कपड़े, जैसे स्टॉकिंग्स और जूते पहने, और दक्षिण अफ्रीका में अधिकांश भारतीयों की तरह खाते समय चाकू और कांटे का उपयोग करे. कस्तूरबा ने दक्षिण अफ्रीका में नया घर चलाने के लिए अपने पति की इच्छाओं का पालन करने की पूरी कोशिश की. लेकिन वो हमेशा अपने पति की बात से सहमत नहीं होती थीं.

गांधी और कस्तूरबा का परिवार बढ़ता गया. उनके दो और बेटों, रामदास और देवदास का जन्म हुआ. गांधी वकील के रूप में काम करते रहे. लेकिन उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीय लोगों के अधिकारों के लिए काम करना कभी बंद नहीं किया.

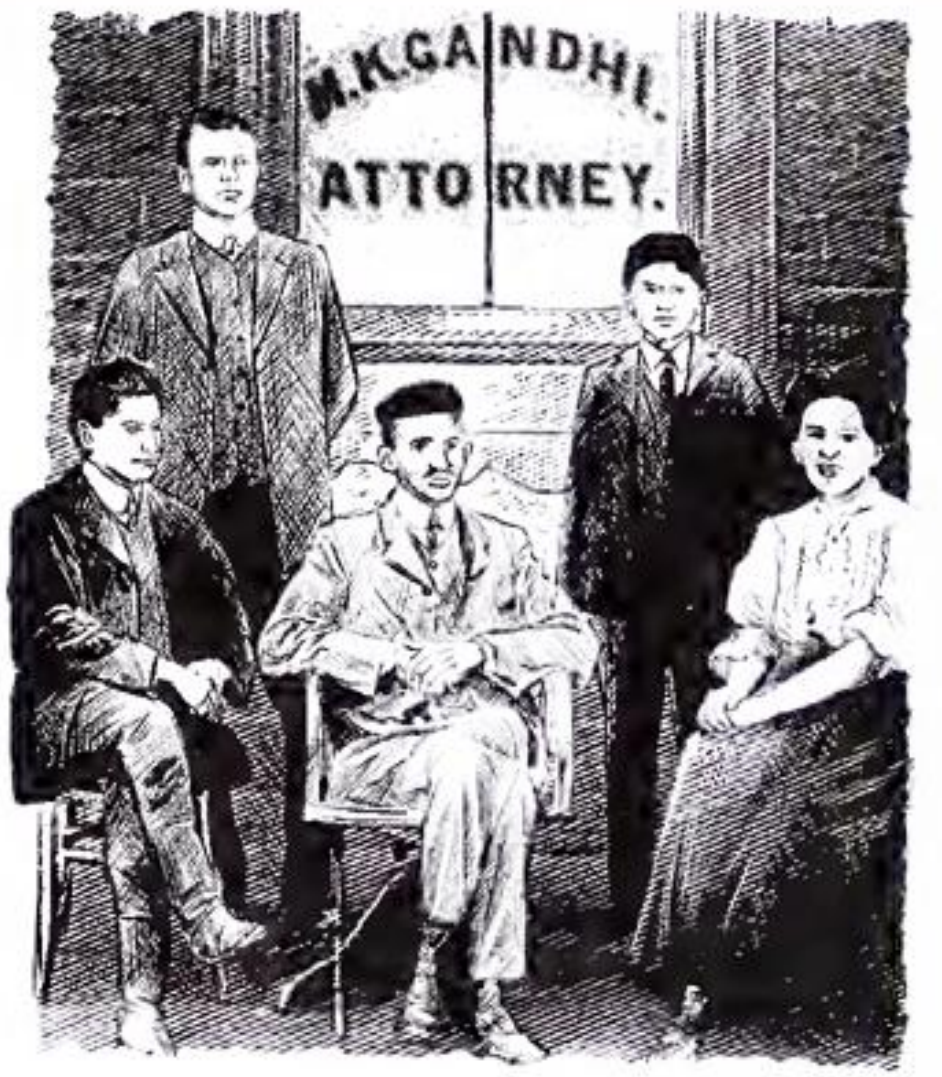


1899 में, डच बोअर्स और अंग्रेजों के बीच "बोअर युद्ध" शुरू हुआ. गांधी ने महसूस किया कि अंग्रेज, भारतीयों के साथ तभी अच्छा व्यवहार करेंगे अगर भारतीय वहां सरकार का समर्थन करें. उन्होंने एक हजार से अधिक स्वयंसेवकों के साथ एक भारतीय एम्बुलेंस कोर का गठन किया. उन्होंने युद्ध के मैदान से घायल सैनिकों को उठाया और उनकी देखभाल की.

लेकिन गाँधी की यह वफादारी रंग नहीं लाई. ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के अधिकारों को सीमित करना जारी रखा.

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय को एक साथ संगठित करने के अन्य तरीके खोजे. 1903 में, उन्होंने "इंडियन ओपिनियन" नामक एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की.




सरकार में क्या हो रहा था, उन्होंने उसके बारे में लिखा. उन्होंने प्राकृतिक दवाओं से बीमारियों के इलाज के तरीकों के बारे में लिखा. उन्होंने शाकाहारी भोजन के लाभों के बारे में भी लिखा.

दक्षिण अफ्रीका में, गांधी ने अपने जीवन दर्शन को विकसित किया. उन्होंने इसे सत्याग्रह कहा - सत्य (सत्य) और आग्रह (बल) शब्दों से. "सत्य बल" वो हथियार बन गया जिसका इस्तेमाल उन्होंने भारतीय आबादी से अनुचित व्यवहार की खिलाफत के लिए किया. सत्याग्रह में असहयोग, अहिंसा और न्यूनतम चीज़ों के उपयोग के विचार शामिल थे.

## सत्याग्रह

असहयोग, या सविनय अवज्ञा - यदि कानून अनुचित हो तो उस कानून को तोड़ने के अहिंसक तरीके.

अहिंसा का अर्थ है किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाना और दूसरों से लड़ने की बजाए उनसे प्रेम करना.

न्यूनतम चीज़ों का अर्थ है बहुत कम चीज़ों के साथ एक साधारण जीवन जीना, और केवल वही उपयोग करना जिसकी आवश्यकता हो.

1906 में असहयोग आंदोलन की परीक्षा हुई. ट्रांसवाल में, सरकार ने एक कानून पारित किया जिसे गांधी ने "ब्लैक एक्ट" कहा. भारतीयों को सरकार में पंजीकरण कराना था. प्रत्येक पुरुष, महिला और आठ वर्ष से अधिक उम्र के बच्चे को उंगलियों के निशान और प्रमाण पत्र दिए जाने थे. पुलिस किसी भी समय भारतीयों को यह साबित करने के लिए रोक सकती थी कि उन्होंने पंजीकरण कराया था या नहीं. पुलिस चाहती तो उनके घरों की तलाशी भी ले सकती थी.

किसी अन्य समूह को इस तरह पंजीकरण करने की आवश्यकता नहीं थी. गांधी ने बाद में लिखा, "मैंने इसमें भारतीयों से नफरत के अलावा कुछ नहीं देखा."

गांधी ने भारतीयों से सत्याग्रह का उपयोग करने और पंजीकरण न करने का आग्रह किया. गांधी और उनके कई अनुयायियों ने कानून तोड़ा और उन्हें जेल भेजा गया. लेकिन गांधी ने जेल जाना एक सम्मान के रूप में देखा. वो जिस चीज में विश्वास रखते थे, उसके लिए वो साहस से लड़ते थे, भले ही उसका मतलब जेल की सजा ही क्यों न हो.

दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए, गांधी ने बस्तियों की शुरुआत की जहां सत्याग्रह का पालन करने वाले सत्याग्रही एक-साथ रह सकते थे. उन्होंने 1904 में, डरबन के पास "फीनिक्स सेटलमेंट" खोला. 1909 में, गांधी ने एक और बस्ती की स्थापना की, जो जोहान्सबर्ग के पास थी और जो "फीनिक्स सेटलमेंट" से लगभग दस गुना बड़ी थी. उन्होंने इसे "टॉल्स्टॉय फार्म" नाम दिया.

इन बस्तियों में, वे एक बहुत ही साधारण जीवन जीते हुए, केवल सबसे बुनियादी वस्तुओं का उपयोग करके जीने का अभ्यास करते थे. वे अध्ययन और प्रार्थना करते. वे खेती और बागबानी करते थे. सभी एक समुदाय के रूप में एक-साथ काम करते और एक-साथ रहते थे.

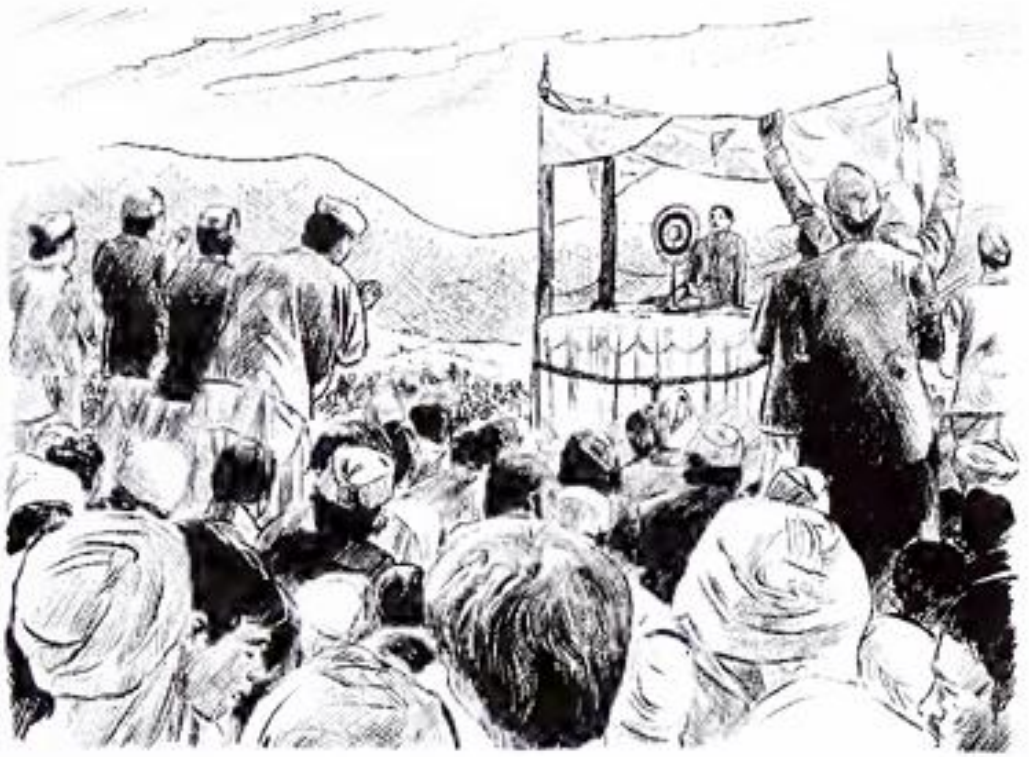

गांधी ने पूरे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों से अहिंसा का अभ्यास करने का आग्रह किया. हड़ताल, या काम से इनकार करना, कार्यस्थल पर अन्याय के खिलाफ खड़े होने और लड़ाई का एक शांतिपूर्ण तरीका था. गांधी ने भारतीय कोयला खनिकों की हड़ताल का आयोजन किया. उनमें से कई मज़दूरों को काम से इनकार करने के कारण जेल में डाल दिया गया, लेकिन उन्होंने हिंसा का कोई इस्तेमाल नहीं किया. गांधी ने सरकार को दिखाया कि भारतीय लोग अनुचित व्यवहार सहन नहीं करेंगे.

# दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद

केवल भारतीय लोग ही नहीं थे जिन्हें दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव का सामना करना पड़ा था. आबादी के एक छोटे से सफेद अल्पसंख्यक ने एक बहुत बड़ी अश्वेत अफ्रीकी आबादी पर शक्ति का प्रयोग किया था.

1948 में, सरकार ने फैसला लिया कि सभी जातियों - सफेद, काले, भारतीय और रंगीन (मिश्रित जाति) को रंगभेद के कानूनों के तहत एक-दूसरे से अलग रखा जाना चाहिए. रंगभेद का मतलब भाषा में अलगाव से भी था. विभिन्न नस्लों के लोग अब एक ही पड़ोस में नहीं रह सकते थे.

नेल्सन मंडेला

विभिन्न नस्लों के लोग अब एक ही स्कूल या अस्पताल, बस, परिवहन, यहाँ तक कि एक ही समुद्र तट पर एक-साथ नहीं जा सकते थे. इससे अश्वेत लोग अक्सर गरीबी में रहते थे और अपने कई अधिकारों से वंचित रहते थे.

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद 1991 तक समाप्त नहीं हुआ.

1994 में, अंततः जब सभी जातियों के लोग दक्षिण अफ्रीका में मतदान कर पाए, तब उन्होंने देश ने अपने पहले अश्वेत राष्ट्रपति, नेल्सन मंडेला को चुना.

दक्षिण अफ्रीका में बीस साल की कड़ी मेहनत के बाद, गांधी आखिरकार कुछ बदलाव ला पाए. सरकार ने जुलाई 1914 में भारतीय राहत अधिनियम पारित किया, जिसमें उसने अनुचित करों को समाप्त किया और विवाह कानून में बदलाव लाया और उसमें सभी धर्मों को शामिल किया गया.

तब गांधी को लगा कि दक्षिण अफ्रीका में उनका काम समाप्त हो गया था. उन्होंने केवल एक वर्ष रहने की योजना बनाई थी, लेकिन वो वहां इक्कीस साल रहे!

गांधी एक शर्मीले, युवा वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए थे. अब अपने चालीसवें वर्ष में, वो एक प्रसिद्ध नेता के रूप में वहां से वापिस भारत लौटे. वो अब "सच के बल" को भारत वापस लाए थे.

# अध्याय 5
# भारत में महात्मा

गांधी बीस साल से अधिक समय तक भारत से दूर रहे थे. लेकिन दक्षिण अफ्रीका में उनका काम भारत में काफी प्रसिद्ध था. उनके लिखे पर्चे भारत में बांटे गए थे. इंग्लैंड और भारत दोनों देशों के अखबारों ने दक्षिण अफ्रीका में उनके काम की खबरें छापी थीं. भारत में उनका एक हीरो की तरह स्वागत हुआ.

उस समय के सबसे प्रसिद्ध कवि, रवींद्रनाथ टैगोर ने गांधी को "महात्मा" यानि "महान आत्मा" का ख़िताब दिया. भारतीयों ने गांधी के प्रति अपना आदर और सम्मान दिखाने के लिए उन्हें महात्मा कहना शुरू कर दिया.

गांधी एक मिशन के साथ अपने वतन वापिस आए थे. वे चाहते थे कि भारत, खुद स्वयं शासन करे. वो ब्रिटिश राज को दिखाना चाहते थे कि भारतीय उनके प्रति वफादार रहेंगे. उन्होंने भारतीयों से आश्वस्त होने और निष्पक्ष रूप से कार्य करने का आग्रह किया. उन्होंने अपने देशवासियों से अंग्रेजों के प्रति सम्मान दिखाने और उनके साथ दुश्मन जैसा व्यवहार न करने का आग्रह किया. बदले में, उन्हें उम्मीद थी कि ब्रिटिश सरकार, भारत को उसकी स्वतंत्रता देगी. गांधी यह भी चाहते थे कि भारतीय अपनी परंपराओं के अनुचित हिस्सों को देखें, जैसे कि जाति व्यवस्था और अछूतों के साथ व्यवहार. वे भारत में भी सत्याग्रह करना चाहते थे.

उन्होंने भारत में भी एक बस्ती बनाई जो फीनिक्स और टॉल्स्टॉय फार्म समुदायों जैसी ही थी. "सत्याग्रह आश्रम" की बस्ती अहमदाबाद शहर के पास साबरमती नदी के किनारे थी.

गांधी ने इस स्थान को ध्यान से चुना था. अहमदाबाद कपड़ा उद्योग का केंद्र था. गांधी के आश्रम के लोग सूत कातते थे और कपड़ा बुनते थे.

अहमदाबाद के व्यापारियों ने आश्रम का स्वागत किया और सहायता के लिए धन एकत्र किया. 25 मई, 1915 को खुला "सत्याग्रह आश्रम" के सदस्य एक बड़े परिवार की तरह रहते थे. सूत कातने के अलावा, वे खेती करते थे और फलों के पेड़ उगाते थे. वे पढ़ते-लिखते थे और प्रार्थना करते थे. वे बहुत कम साधनों में एक साधारण जीवन जीते थे.

गांधी ने भारत के अछूतों को हरिजन कहा, जिसका अर्थ है "भगवान के बच्चे." वो उनके साथ अन्य भारतीयों की तरह व्यवहार करना चाहता था. लेकिन आश्रम के सदस्य, जो गांधी के अधिकांश विश्वासों से सहमत थे, वे भी अछूतों के बारे में गांधी के विचारों से सहमत नहीं थे. सितंबर 1915 में, एक अछूत दंपति और उनकी बेटी आश्रम में शामिल होना चाहते थे. गांधी ने उन्हें स्वीकार कर लिया. पर कुछ सदस्यों ने इसका विरोध किया और वे आश्रम छोड़कर चले गए. उस घटना से कस्तूरबा भी परेशान हुईं.

कस्तूरबा ने अछूत महिला के साथ रसोई में काम करने से मना कर दिया. जिन कपड़ा मालिकों ने आश्रम चलाने के लिए पैसे दान किए थे, उन्होंने अपना समर्थन जारी रखने से इनकार कर दिया.

फिर एक दिन, अहमदाबाद के सबसे शक्तिशाली हिंदू व्यापारियों में से एक, आश्रम में आए. उन्होंने गांधी को इतना पैसा दिया जिससे आश्रम को कम-से-कम एक और साल तक चालू रखा जा सके. उससे गांधी प्रसन्न हुए.

क्योंकि पारंपरिक हिंदू लोग आश्रम के प्रयासों में मदद को तैयार थे, इससे गांधी को यह विश्वास हुआ कि परिवर्तन जल्द ही आएगा. कस्तूरबा ने गांधी को अपने नेता के रूप में देखा और उनके साथ खड़ी रहीं.

गांधी ने आश्रम के आसपास के गांवों में रहने वाले गरीब लोगों की भी देखभाल की. उन्होंने गांवों में स्कूल खोले. उन्होंने किसानों को सिखाया कि अच्छी स्वच्छता बीमारी को दूर रखने में मदद कर सकती है. उन्होंने किसानों को सलाह भी दी.

गांधी ने अहमदाबाद की फैक्ट्रियों में मजदूरों को बिना हिंसा के, मालिकों के खिलाफ हड़ताल करने के लिए संगठित किया. हड़ताल से उत्पादन काम रुक गया और यह साबित हुआ कि अहिंसा बदलाव का काम कर सकती थी.

1914 में यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया. चूंकि ब्रिटेन लड़ाई में शामिल था, इसलिए भारत भी उसमें शामिल हुआ. गांधी ने युद्ध का समर्थन किया, भले ही वे अहिंसा में विश्वास करते थे.

एक बार फिर, उन्होंने सोचा कि ब्रिटेन का समर्थन करने से भारत को अपनी स्वतंत्रता हासिल करने में मदद मिल सकती थी. "हमें समझना चाहिए," उन्होंने वाइसराय को एक पत्र में लिखा, "कि अगर हम ब्रिटिश साम्राज्य को बचाने के लिए सेवा करते हैं, तो हमने उस कार्य से अपना होम-रूल सुरक्षित कर लिया है." कई भारतीयों ने ब्रिटिश सेना के लिए स्वेच्छा से काम किया और उन्हें युद्ध जीतने में मदद की.

लेकिन ब्रिटेन ने भारत को स्वशासन का इनाम नहीं दिया. जब युद्ध समाप्त हुआ, तो सरकार ने भारतीयों के खिलाफ और भी कठोर कानून पारित किए! 1919 के रॉलेट एक्ट का कानून बनाया जिससे कोई भी समूह सरकार के खिलाफ संगठित नहीं हो सकता था. गांधी जानते थे कि यह कानून अनुचित था. सत्य बल का फिर से उपयोग करने का समय आ गया था.

गांधी ने 6 अप्रैल, 1919 को रॉलेट एक्ट के विरोध में एक हड़ताल का आह्वान किया. यह बात पूरे भारत में समाचार पत्रों और स्थानीय बैठकों के माध्यम से फैल गई. एक दिन के लिए, भारतीय काम पर नहीं जाएंगे. दिन भर के लिए दुकानें, रेलवे और खेत बंद रहेंगे. कई भारतीय उपवास और प्रार्थना करने के लिए दिन बिताने के लिए हड़ताल के दौरान शांति से एकत्र हुए.

गांधी उस परिणाम से प्रसन्न थे. उन्होंने कहा, "पूरे भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक, कस्बों और गांवों में, उस दिन पूरी तरह से हड़ताल हुई. यह सबसे अद्भुत तमाशा था."

लेकिन कुछ शहरों में, हड़ताल ठीक नहीं हुई. गांधी को खबर मिली कि कुछ भारतीयों ने इमारतों को जला दिया था और रेल की पटरियों को तोड़ा था. अमृतसर में बहुत से अंग्रेज मारे गए. लोग शांतिपूर्ण हों या हिंसक, पुलिस उनके साथ एक-जैसा ही व्यवहार करती थी. पुलिस ने लोगों को अपनी पीतल की नोक वाली लाठियों से पीटा.

गांधी बहुत परेशान थे. उन्होंने इस तरह की हड़ताल की योजना नहीं बनाई थी. उन्होंने महसूस किया कि पूरा भारत अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं था. "मैंने बेहतर चीजों की उम्मीद की थी..." गांधी ने कहा, “और मुझे लगा कि मैं उनके अपराध में भागीदार हूं."

हड़ताल के बाद, ब्रिटिश अधिकारी चिंतित थे कि हिंसा और भड़क सकती थी.

सामान्य डायर

12 अप्रैल को, 1919, अमृतसर शहर में सैनिकों के प्रभारी ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर ने नागरिकों के लिए एक उद्घोषणा जारी की. इसमें बताया गया कि भारतीयों की किसी भी सभा आयोजित करने की अनुमति नहीं थी.

अगले दिन 13 अप्रैल को छुट्टी थी. वैशाखी दिवस कई भारतीयों के लिए धार्मिक नए साल की शुरुआत थी.

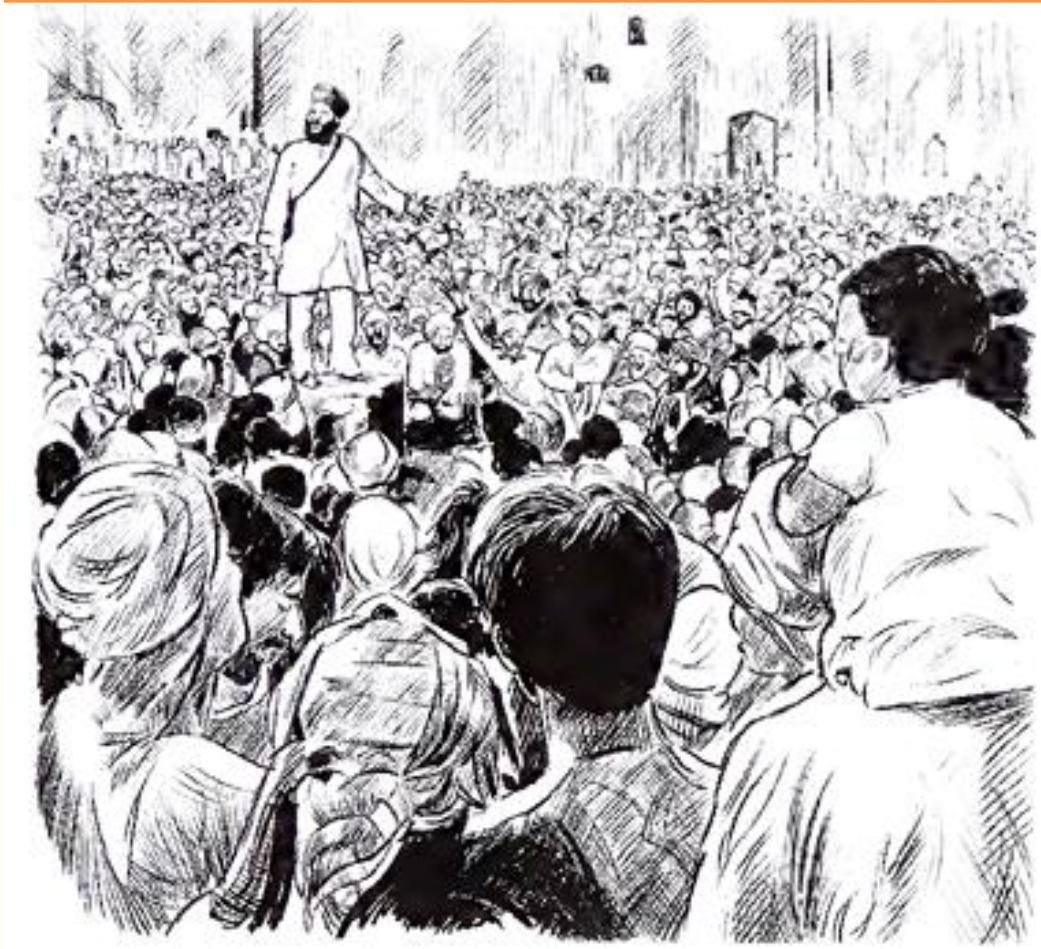

शहर के बीचों बीच स्थित जलियांवाला बाग चौक में जश्न मनाने के लिए करीब दस हजार से बीस हजार लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. चौक में एक संकरा प्रवेश द्वार था, जो चारों ओर से ऊँची इमारतों से घिरा हुआ था. भीड़ ने अभी तक भारतीय सभाओं पर प्रतिबंध के बारे में नहीं सुना था. उन्होंने मंच पर एक वक्ता को शांति से सुना.

तभी जनरल डायर पहुंचे. वो नब्बे सैनिक और दो बख्तरबंद गाड़ियां अपने साथ लाए थे. उन्होंने प्रवेश द्वार जाम कर दिया. जनरल डायर ने अपने सैनिकों को पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की निहत्थे भीड़ पर गोलियां चलाने का आदेश दिया.

लोग घबरा गए और उन्होंने भागने का प्रयास किया. लेकिन उन्हें कोई रास्ता नहीं मिला. फायरिंग दस मिनट तक चली. आधिकारिक ब्रिटिश रिपोर्टों के अनुसार 379 लोग मारे गए और 1,137 घायल हुए. लेकिन भारतीयों के अनुसार यह संख्या कहीं अधिक थी.

# स्मरण

आज जलियांवाला बाग एक सार्वजनिक उद्यान है. 1951 में, नरसंहार में अपनी जान गंवाने वाले कई भारतीयों को सम्मानित करने के लिए बगीचे में एक स्मारक बनाया गया. यहाँ आने वाले आगंतुक हर तरफ ऊंची दीवारों को देख सकते थे, कुछ में अभी भी गोलियों के छेद थे. 13 अप्रैल 1919 को अपनी जान गंवाने वाले सभी लोगों को याद करने के लिए एक शाश्वत लौ जलती है.

जनरल डायर ने इस घटना को भारतीयों को सबक सिखाने के तरीके के रूप में देखा. सरकार ने कानून बनाए, और लोगों को उनका पालन करना पड़ा.

गांधी भयभीत थे. इस नरसंहार में कई निर्दोष भारतीय मारे गए थे. गांधी अब ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार नहीं रहेंगे. उनके लिए अब वापस लड़ने का समय आ गया था.

# अध्याय 6
# अहिंसक असहयोग

अमृतसर में शांतिपूर्ण सभा हिंसक नरसंहार में बदल गई थी. भारतीय जनता अब जानती थी कि वे अपनी जान की परवाह किए बिना सरकार के खिलाफ रैली नहीं निकाल सकते थे.

गांधी ने इस डर का बहादुरी से सामना किया. वो असहयोग के अपने हथियार के साथ ब्रिटिश सरकार के सामने खड़े हुए. उन्होंने भारतीय लोगों से भी उनके साथ खड़े होने का आग्रह किया. लेकिन अब लोगों को कानून तोड़ने के साथ मिली सजा का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा. गांधी ने राजनीतिक बैठकों में, भाषणों में और अपनी पत्रिका "यंग इंडिया" में लेखों के माध्यम से इस बात का प्रचार-प्रसार किया.

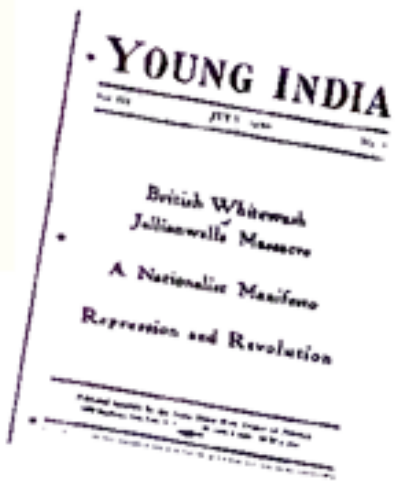
YOUNG INDIA

British Whitewash
Jallianwalla Massacre
A Nationalist Manifesto
Repression and Revolution

1920 में, गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के नेता बने. कांग्रेस ने उनके अहिंसक असहयोग अभियान को अपनाया. अब कांग्रेस भारतीय लोगों के लिए एक मजबूत राजनीतिक आवाज बन रही थी.

अनुचित कानूनों के खिलाफ खड़े होने के लिए हड़ताल एक अहिंसक तरीका था. बहिष्कार एक और तरीका था. बहिष्कार कुछ वस्तुओं को खरीदने से इनकार करना भी हो सकता था. भारत में कपड़े के निर्माण और बिक्री पर अंग्रेजों का नियंत्रण था. गांधी ने भारतीयों से ब्रिटिश कपड़ा खरीदने से मना करने का आग्रह किया, ताकि ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का भारत में नुक्सान हो और आर्थिक चोट पहुंचे.

इसके बजाए, गांधी ने भारतीयों को अपना कपड़ा बनाने के लिए प्रेरित किया. घर में कपड़ा बनाने से भारतीय समुदाय अंग्रेजों को पैसे देने के बदले पैसे बचाता. गांधी का मानना था कि कताई और बुनाई भारतीयों को ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्ति दिलाने में मदद करेगी.

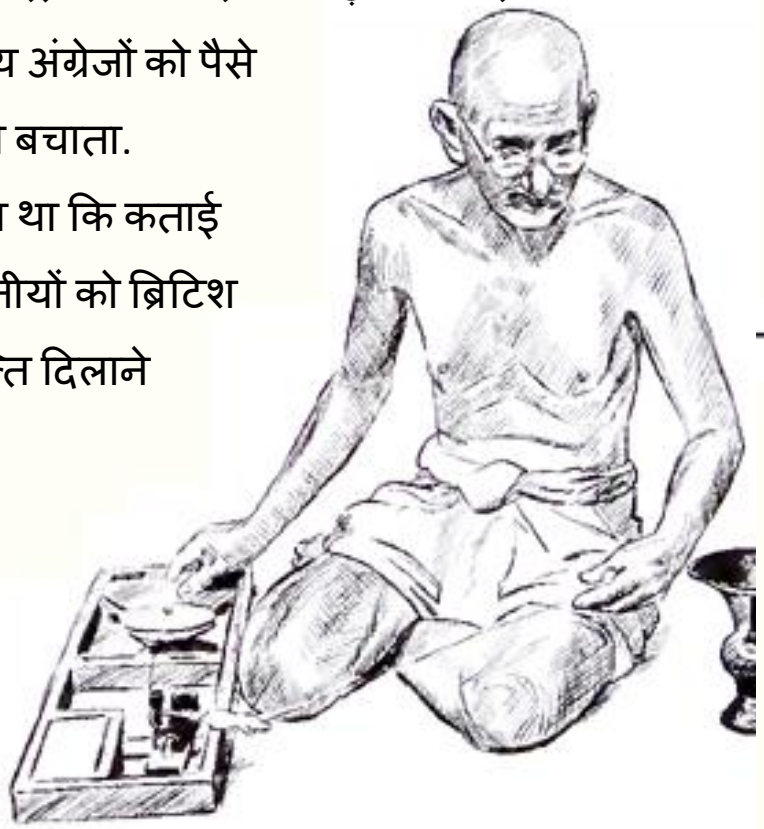

गांधी ने स्वयं प्रतिदिन सूत कातने की कसम खाई थी. जरूरत पड़ने पर वो देर रात तक जागकर चरखा कातते थे. उन्होंने खादी (हाथ से काते हुए कपड़े से बने कपड़े) सैंडल और ठंडे मौसम में एक शॉल पहनना शुरू किया. गांधी के लिए चरखा केवल धागा बनाने का उपकरण नहीं था. वो भारत की स्वतंत्रता का एक राष्ट्रीय प्रतीक बन गया. वास्तव में, आज भी भारत के झंडे पर एक चरखा चित्रित है.

## गांधी के अहिंसक हथियार

हड़ताल : काम करने से इंकार

बायकॉट : सामान खरीदने से इंकार

उपवास : खाने से इंकार

गांधी के लिए 15 लाख वर्ग मील के अपने देश में अपना संदेश फैलाना हमेशा आसान नहीं होता था! इसलिए अपनी पत्नी को आश्रम में छोड़कर, गांधी शेष भारत का लगातार दौरा करते रहते थे.

भारत में ज्यादातर गरीब लोग गांवों में रहते थे जहां ट्रेन या कार से पहुंचना मुश्किल था. इसलिए गांधी खूब पैदल यात्रा करते थे.

पूरे भारत में अपनी यात्राओं के बारे में, उन्होंने कहा, "जब तक आप दिल्ली, बम्बई और अन्य शहरों से बाहर नहीं निकलेंगे, तब तक आप वास्तविक भारत को कभी नहीं जान पाएंगे और भारतीय जनमानस को नहीं समझ पाएंगे."

भारत के लाखों गांवों में करोड़ों गरीब लोग टूटी-फूटी झोपड़ियों में जीवन गुजारते हैं. वे सुबह से रात तक धूप में खेतों में काम करते हैं. फिर भी वे आधा पेट खाकर ज़िंदा रहते हैं."

गांधी ने आम लोगों की समस्याओं और चिंताओं को सुना, और भारत के ग्रामीणों ने उन्हें एक संत की तरह माना. वे उन्हें बापू कहते थे, जिसका अर्थ था पिता.

गांधी चाहते थे कि उनके बेटे अच्छे उदाहरण बनें. उनका सबसे बड़ा बेटा हरिलाल पहले ही परिवार से दूर जा चुका था. लेकिन उनके अन्य बेटों ने उनके मिशन का समर्थन किया. मणिलाल, दक्षिण अफ्रीका वापस चले गए और गांधी द्वारा शुरू किए गए काम को जारी रखने के लिए वे "इंडियन ओपिनियन" के संपादक बन गए. रामदास और देवदास दोनों ने भारत में अपने पिता का समर्थन किया और उनके साथ मिलकर काम किया.

मार्च 1922 में, गांधी को कानून तोड़ने और लोगों को उकसाने के लिए गिरफ्तार किया गया. इसे देशद्रोह माना गया. अपने मुकदमे में, गांधी ने पैरवी करते हुए कहा कि वो कभी एक वफादार ब्रिटिश विषय थे. लेकिन चूंकि ब्रिटिश कानून भारतीय और सभी गैर-श्वेत लोगों के लिए इतने अनुचित थे, इसलिए उन्होंने अंग्रेज़ों का सहयोग करने से इनकार कर दिया. गाँधी ने अपना गुनाह कबूल कर लिया और कहा कि वो सजा भुगतने को तैयार थे - पूना के यरवडा सेंट्रल जेल में, छह साल की सजा.

गांधी को जेल से ऐतराज नहीं था. दरअसल, उन्होंने जेल में अकेले रहने का स्वागत किया. उन्होंने आराम किया, पढ़ा और खूब चिंतन-मनन किया. और वो रोज घूमे.

हालाँकि, जनवरी 1924 में, वो एपेंडिसाइटिस से पीड़ित हुए. उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा. दो साल के बाद, अदालत ने फैसला किया कि गांधी की सजा काफी लंबी थी. फरवरी 1924 में उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया.

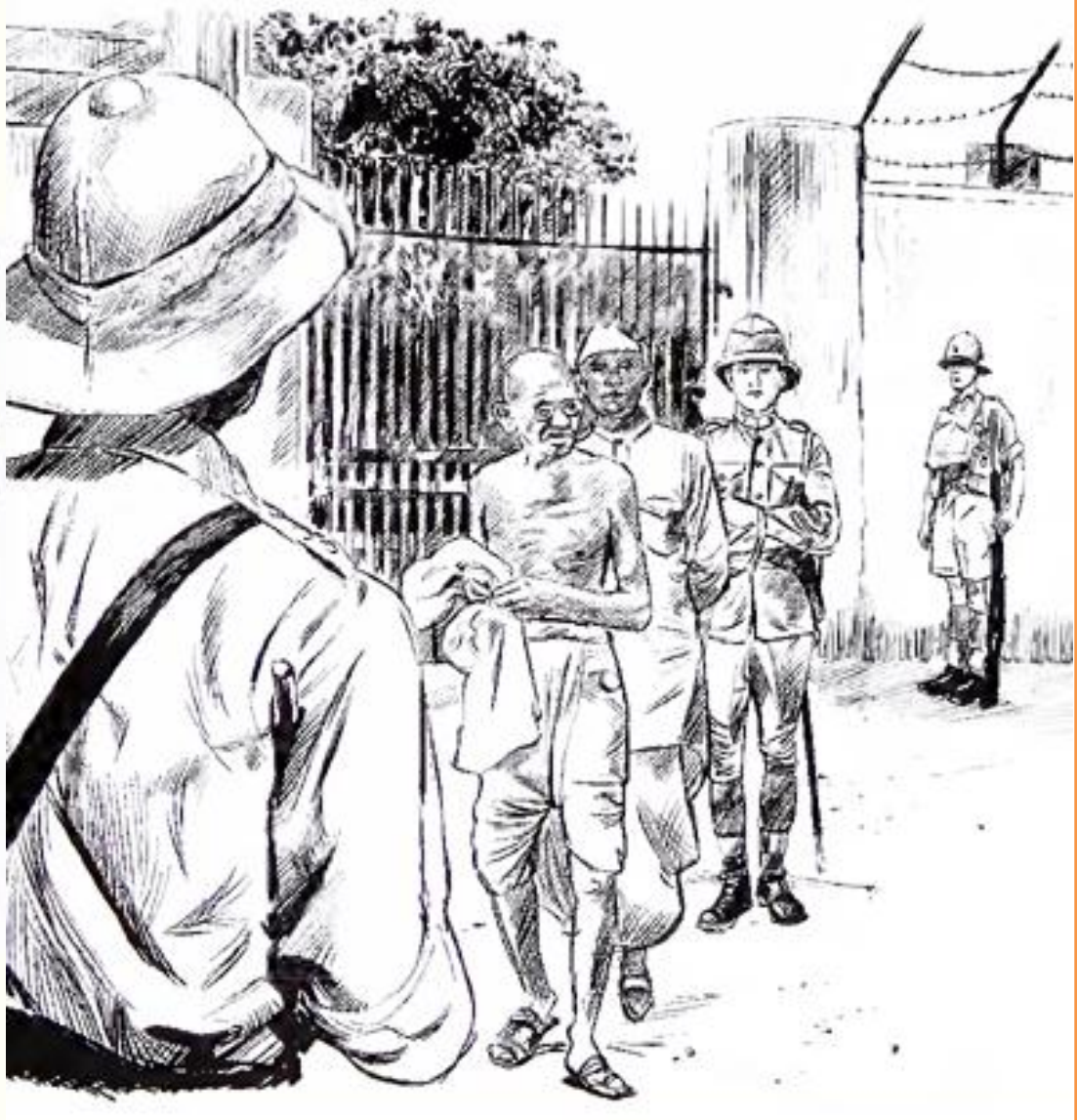

गांधी भारत को एकजुट करने के लिए काम पर वापस गए. इस बार, उन्होंने अपना ध्यान हिंदुओं और मुसलमानों के बीच विभाजन पर केंद्रित किया.

इन दो धार्मिक समूहों का भारत में आपस में लड़ने का एक लंबा इतिहास था. वे अक्सर धार्मिक मान्यताओं में मतभेदों को लेकर एक-दूसरे के साथ हिंसक रूप से लड़ते थे. गांधी ने अपने शांतिपूर्ण हथियारों में से एक का इस्तेमाल किया - उपवास. फिर हिंदु और मुसलमान एक-दूसरे को सुनने लगे. सितंबर 1924 को गांधी ने खाना छोड़ दिया और तीन सप्ताह का उपवास शुरू किया. उस दौरान उन्होंने केवल पानी पिया. वो बेहद कमजोर हो गए.

हिंदुओं और मुसलमानों ने अपने मतभेदों को दूर करने का फैसला किया ताकि गाँधी अपना उपवास तोड़ें और फिर से खाना शुरू करें. लोग नहीं चाहते थे कि गांधी अब और कष्ट सहें. दोनों धर्मों के धर्मगुरु एक-दूसरे के साथ शांति से रहने की कोशिश करने को सहमत हुए.

12 मार्च 1930 को, गांधी ने अहमदाबाद में 78 लोगों के एक समूह के साथ अपना छोड़ा. वे समुद्र की ओर एक यात्रा के लिए दक्षिण की ओर बढ़े. उसमें लगभग एक महीना लगा. मौसम असहनीय रूप से गर्म था, इसलिए वो ठंडे समय यानि - सुबह और शाम ही यात्रा करते थे. धूल को कम रखने के लिए ग्रामीणों ने धूल भरी सड़कों पर पानी का छिड़काव किया. पैदल चलने को आसान बनाने के लिए उन्होंने रास्ते में पत्ते और फूलों की पंखुड़ियां फेंकी.

240 मील की यात्रा के दौरान, गांधी के सैकड़ों अनुयायी बनें. समूह कई हजार तक बढ़ गया जिसमें युवा और बूढ़े, पुरुषों और महिलाओं, मुस्लिम, ईसाई, हिंदू और अछूत सभी का मिश्रण था. कुछ स्थानीय अखबारवाले शुरू से ही उनके साथ-साथ चले.

जैसे-जैसे खबर फैली भीड़ और बढ़ती गई, दुनिया भर के अखबारों ने अपने पहले पन्नों पर इस ऐतिहासिक यात्रा के बारे में लेख छापे.

# नमक अधिनियम

भारत में नमक का टैक्स तब से लगा जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1600 के दशक में नमक का निर्यात करना शुरू किया था.

नमक अधिनियम टैक्स के अंतर्गत किसी के लिए भी समुद्र के पानी से अपना नमक बनाना कानून के खिलाफ था. इससे यह सुनिश्चित हो गया कि ब्रिटिश नमक पर टैक्स लगाकर भारी लाभ कमाएंगे—यहां तक कि उन भारतीय लोगों से भी जो नमक का उत्पादन करते थे. सभी भारतीयों को अंग्रेजों से नमक खरीदने को विवश होना पड़ा. यह विशेष रूप से भारत के गरीबों के लिए सरासर अनुचित था जो इस टैक्स को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे.

गांधी के आश्रम छोड़ने के चौबीस दिन बाद 5 अप्रैल को, वो अरब सागर के एक प्रवेश द्वार, खंभात की खाड़ी के तट पर दांडी पहुंचे. उस रात, उन्होंने और उनके अनुयायियों ने समुद्र तट पर प्रार्थना की.

अगली सुबह, गांधी हिंदू परंपरा के अनुसार स्नान करने के लिए पानी में गए. फिर वो समुद्र तट पर चले और नमक अधिनियमों की अवहेलना करते हुए उन्होंने एक चुटकी से नमक की एक गांठ उठाई.

एक हफ्ते के भीतर ही देश के कई हज़ार मील के समुद्र तट पर, हजारों भारतीयों ने नमक बनाने और बेचने के लिए समुद्री जल इकट्ठा करके कानून तोड़ा.

भारतीय शहरों में जमा हुए, जहां पुलिस ने भीड़ को लाठियों से पीटा. हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया. 5 मई को, गांधी को भी गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया.

साथ ही जवाहरलाल नेहरू, जो एक INC सदस्य और भरोसेमंद मित्र सहित अन्य राजनीतिक नेताओं को भी जेल में डाला गया.

नेहरू, गांधी और पटेल

अंततः अंग्रेजों को एहसास हुआ कि "महात्मा" गांधी भारत में एक शक्तिशाली शक्ति थे. उन्होंने अहिंसक असहयोग के अपने अभियान से पूरे देश को एकजुट कर दिया था.

# अध्याय 7
# भारत छोड़ो

गांधी ने जब भारतीय लोगों को एकजुट किया तब अंग्रेजों को गांधी की बात सुननी ही पड़ी. सरकार को बाकी दुनिया की कठोर प्रतिक्रिया का भी सामना करना पड़ा. गांधी और अन्य कांग्रेस सदस्यों को जेल से रिहा करने की मांग को लेकर सरकार को दुनिया भर से टेलीग्राम प्राप्त हुए. भारत में वायसराय लॉर्ड इरविन ने गांधी से मुलाकात की. साथ में, वे एक समझौते पर पहुंचे. गांधी सविनय अवज्ञा अभियान को बंद कर देंगे, सभी कैदियों को रिहा कर दिया जाएगा, और भारतीय अपना नमक खुद बना पाएंगे.

गांधी 1931 के गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस INC का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार थे. वहां वे एक स्वतंत्र भारत के समर्थन में बोलेंगे.

गांधी ने अपने बेटे देवदास और कुछ अन्य समर्थकों के साथ लंदन की यात्रा की. लंदन में गांधी किसी फैंसी होटल में नहीं रहना चाहते थे. उसकी बजाए वो एक दोस्त के घर पर मेहमान जैसे रहे, और उन्होंने लंदन के गरीब लोगों के साथ बातें कीं, और झुग्गी-झोपड़ियों में घूमते हुए अपना दिन बिताया.

जबकि अन्य राजनीतिक नेता सूट-टाई पहने थे, गांधी ने अपनी खादी और सैंडल पहनी. उन्होंने किंग जॉर्ज पंचम और इंग्लैंड की महारानी मैरी के साथ अपने सादे कपड़ों में ही चाय पी.

अब तक गांधी विश्व प्रसिद्ध हो चुके थे. उनके आगमन की खबर अखबारों के पहले पन्ने पर छपी. हजारों लोग उनकी एक झलक पाने के लिए इकट्ठे हुए. लंदनवासियों ने बड़े विचारों वाले इस मिलनसार, दयालु छोटे आदमी से मिलने का आनंद लिया.

लेकिन उन्हें स्वतंत्रता की अपनी योजनाओं में सफलता नहीं मिली. भारत लौटने के एक सप्ताह के भीतर, सरकार ने उन्हें और अन्य भारतीय नेताओं को एक और असहयोग अभियान शुरू करने के लिए गिरफ्तार किया.

गांधी यरवडा जेल में रहते हुए भी भारतीय लोगों के लिए लड़े. ब्रिटिश सरकार अछूतों (दलितों) को अदालतों और सरकारी व्यवस्थाओं से अलग रखने की योजना बना रही थी. गांधी नहीं चाहते थे कि अछूतों (दलितों) को शेष भारतीय समाज से अलग रखा जाए. इस कानून का विरोध करने के लिए, गांधी ने घोषणा की कि वह मरते दम तक नहीं खाएंगे.

साबरमती जेल में बंद कस्तूरबा को अपने पति के साथ रहने के लिए यरवडा जेल में स्थानांतरित कर दिया गया. डॉक्टरों ने गांधी की जांच की और उन्हें लगा कि वो मरने वाले हैं.

सरकार शीघ्र ही गांधी की शर्तों पर सहमत हो गई और उन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया. सरकार ऐसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय व्यक्ति की मृत्यु का जोखिम नहीं उठाना चाहती थी.

1939 में, अंग्रेजों ने द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया. गांधी इस बात से नाराज थे कि अंग्रेजों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ इस विषय पर चर्चा तक नहीं की.

गाँधी ने ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों से कहा कि भारत तभी सहयोग करेगा जब ब्रिटेन उनसे स्वतंत्रता का वादा करेगा. गांधी ने सोचा कि भारत दूसरों की स्वतंत्रता के लिए क्यों लड़े जब ब्रिटिश कानून के तहत भारतीय खुद परतंत्र थे.

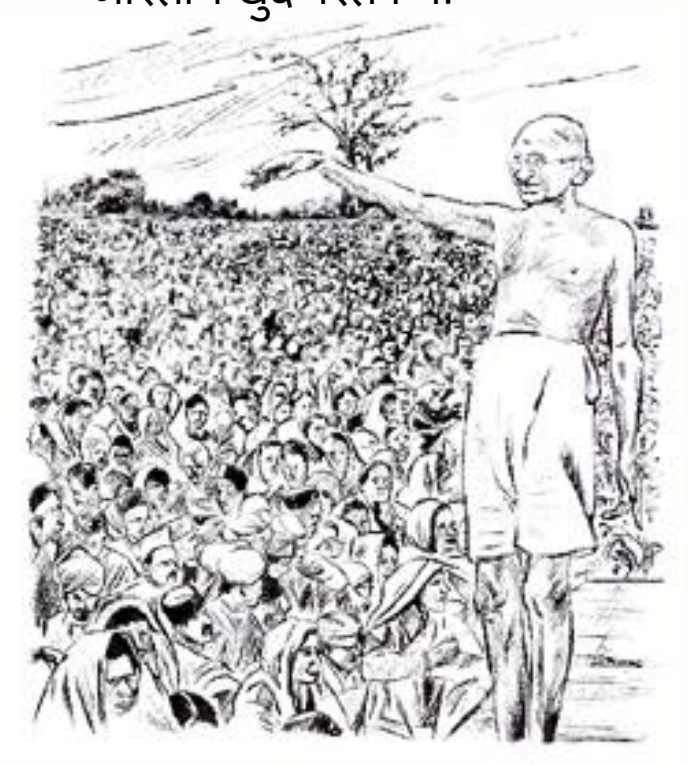

गांधी भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र होते देखने के लिए दृढ़ थे. 1942 में उन्होंने "भारत छोड़ो" आंदोलन शुरू किया. वो चाहते थे कि ब्रिटेन देश छोड़ दे और भारत के लोगों को खुद पर शासन करने दे. उन्होंने अंग्रेजों से कहा कि अगर वे जाने के लिए राजी हो गए, तो भारत युद्ध में ब्रिटेन का समर्थन करेगा और उनकी तरफ से लड़ेगा.

गांधी चाहते थे कि उनका भारत छोड़ो अभियान हमेशा की तरह अहिंसक हो. लेकिन यह उनके नियंत्रण से बाहर हो गया. पूरे भारत में, कई भारतीयों ने दंगा किया. ब्रिटिश सरकार ने गांधी को दोषी ठहराया और उन्हें नेहरू, कस्तूरबा और लगभग पचास अन्य अनुयायियों के साथ गिरफ्तार कर लिया.

इस बार जेल गांधी के लिए निराशाजनक रहा. वो प्रेस से बात नहीं कर सकते थे, पत्र और लेख नहीं लिख सकते थे. और फिर कस्तूरबा दमे से बीमार हो गईं. गांधी की प्यारी पत्नी की मृत्यु 22 फरवरी, 1944 को, जेल में उनकी गोद में हुई. उनकी शादी को साठ साल से अधिक समय हो चुका था.

मलेरिया से गांधी बीमार और कमजोर हो गए. अधिकारियों ने मई 1944 की शुरुआत में उन्हें जेल से रिहा करने पर सहमति व्यक्त की. गाँधी आराम करने और अपनी ताकत वापस पाने के लिए बंबई में एक दोस्त के साथ रहने गए. अपने जीवनकाल के दौरान, उन्होंने कुल साढ़े छह साल जेल में बिताए.

द्वितीय विश्व युद्ध मई 1945 में समाप्त हुआ. ग्रेट ब्रिटेन ने युद्ध लड़ने के लिए इतना पैसा खर्च किया था, उसके पास अब भारत को अपने शासन में रखने के लिए संसाधन नहीं थे. अंत में, अंग्रेजों ने भारत को स्वतंत्रता देने की पेशकश की. गांधी, नेहरू, वल्लभभाई पटेल और अन्य भारतीय नेताओं ने नई सरकार बनाने के लिए मुलाकात की. अंग्रेजों ने ब्रिटेन से सत्ता हस्तांतरण करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को भारत भेजा. लेकिन हिंदू और मुसलमान अभी भी अपने मतभेदों को नहीं सुलझा सके थे. देश को दो भागों में बांटना (हिंदुओं के लिए भारत और मुसलमानों के लिए उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान) एकमात्र समाधान प्रतीत होता था.

15 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत आजाद हुआ. नेहरू इसके नए प्रधानमंत्री बने. जब भारत आखिरकार एक राष्ट्र बना तब गांधी कलकत्ते की एक झोपड़ी में लकड़ी की चारपाई पर बैठे थे.

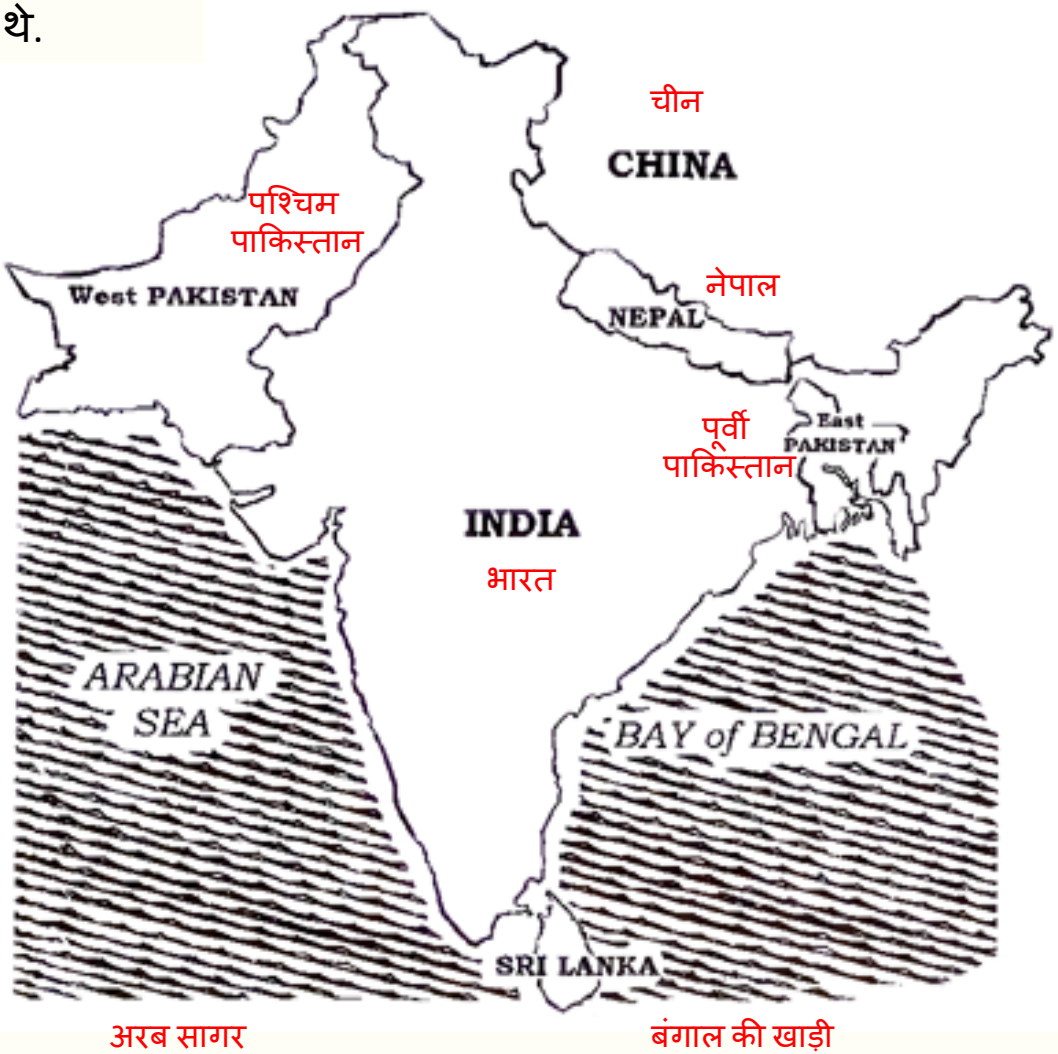


पूरे भारत में लोगों ने जश्न मनाया, पर गांधी ने नहीं.

## जवाहर लाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद में हुआ था. गांधी की तरह उन्होंने अपनी शिक्षा इंग्लैंड में प्राप्त की. वो गांधी के सबसे करीबी सहयोगियों में से एक थे. उनका स्वतंत्र भारत में दृढ़ता से विश्वास था और वो कई बार कैद हुए. उन्होंने 1929, 1936, 1937, और 1946 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया. जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की, तब नेहरू प्रधान मंत्री बने और 1964 में मृत्यु तक इसी पद पर बने रहे.

# अध्याय 8
# रोशनी चली गई

गांधी ने स्वतंत्रता लाने में मदद की थी. भारत को आजाद कराने के उनके हथियार प्रेम और सच्चाई थे. लेकिन गांधी की कोशिशें देश की सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकीं. हिंदू और मुसलमान हिंसक रूप से लड़ने लगे.

पाकिस्तान के निर्माण के बाद, लाखों मुसलमानों और हिंदुओं को अपने घरों को छोड़कर देशों के बीच नई सीमा पार करनी पड़ी. पूर्वी पंजाब के मुसलमानों को पश्चिम (नए पाकिस्तान) की ओर भागना पड़ा. हिंदुओं को पश्चिम से पूर्व की ओर जाना पड़ा. 1947 के दौरान, समूहों के बीच हिंसक नरसंहार हुए. हजारों लोग मारे गए.

कलकत्ता और दिल्ली जैसे बड़े शहरों में भी धार्मिक समूहों के बीच दंगे हुए.

13 जनवरी, 1948 को, गांधी ने उन्हें रोकने के लिए अनशन शुरू किया. उन्होंने पानी तक नहीं पिया. वो दर्द में थे. लेकिन बिस्तर पर लेटकर भी उन्होंने प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया. गांधी की प्रार्थनायों को रेडियो पर प्रसारित किया जाता था और वे पूरे भारत में सुनी जाती थीं. पांच दिनों की बातचीत के बाद, हिंदू और मुस्लिम दोनों राजनीतिक नेता गांधी के सामने आए और उनकी शर्तों पर सहमत हुए. वे गांधी की पीड़ा को नहीं सह पाए.

गांधी अभी भी भारत के नेतृत्व के लिए चिंतित थे. नेहरू अब प्रधान मंत्री थे, और पटेल उप-प्रधान मंत्री थे. लेकिन दोनों में हमेशा आपस में बनती नहीं थी. गांधी ने नेहरू को लिखा कि उन्हें एक-साथ काम करना चाहिए. 30 जनवरी, 1948 को, गाँधी पटेल से मिले और उनसे भी उन्होंने वैसा ही करने का आग्रह किया.

फिर वो पटेल के साथ रात का खाना छोड़कर प्रार्थना सभा का नेतृत्व करने के लिए गए. अब गांधी लगभग अस्सी वर्ष के थे.

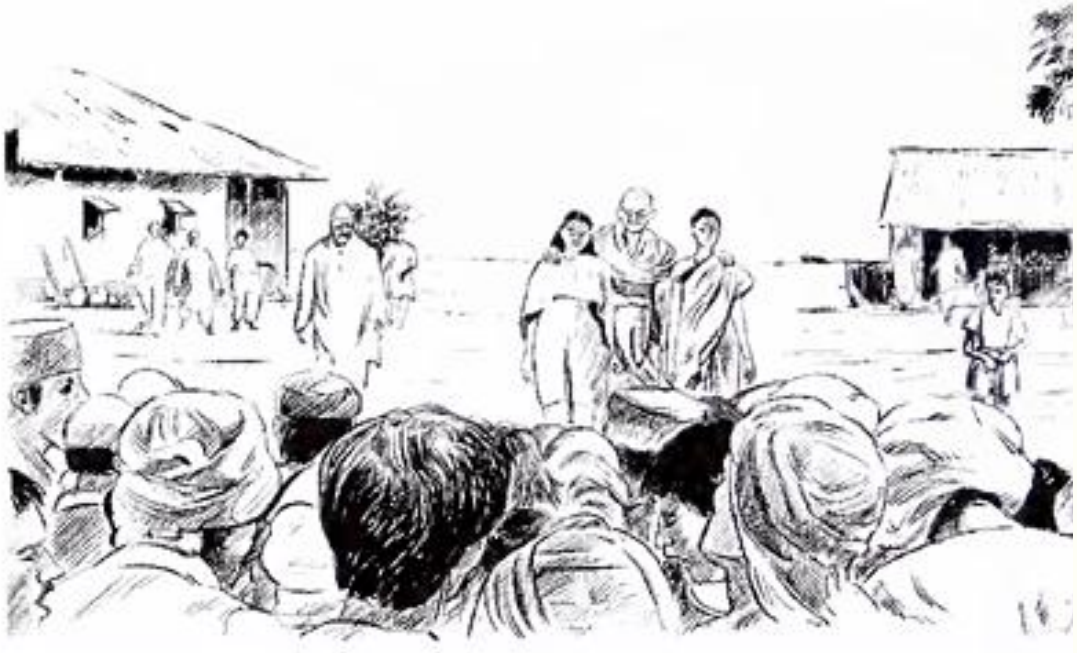

उपवास से उनका शरीर कमजोर हो गया था और उन्हें चलने में परेशानी हो रही थी, इसलिए उन्होंने सहारे के लिए अपने दो अनुयायियों पर भरोसा किया. वो करीब पांच सौ लोगों की भीड़ का अभिवादन करने के लिए बाहर निकले.

गांधी को अधिकांश भारतीय एक आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता के रूप में देखते थे. लेकिन एक अतिवादी हिंदू समूह था जिसने इतने सारे हिंदुओं की मौत के लिए गांधी को जिम्मेदार ठहराया था. वे इस बात से खफा थे कि गांधी मुसलमानों की तरफदारी कर रहे थे.

जैसे ही गांधी मंच की ओर बढ़े, नाथूराम गोडसे, एक हिंदू चरमपंथी, भीड़ को धक्का देता हुआ उनके पास पहुंचा. वो गांधी के सामने झुका. फिर उसने पिस्तौल निकाली और गांधी के सीने में तीन गोलियां दागीं. गांधी जमीन पर गिर पड़े.

जिस शाम गांधीजी की मृत्यु हुई, प्रधानमंत्री नेहरू ने अपने रेडियो संबोधन में कहा, "हमारे जीवन से रोशनी चली गई है और हर जगह अंधेरा है."

भारत और पूरी दुनिया के लोगों ने अपने सबसे महान शिक्षक के खोने पर शोक व्यक्त किया. गांधी भारत के लोगों और दुनिया के लिए एक प्रकाश स्तंभ थे. भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विकसित होने के साथ ही उनका प्रकाश चमकता रहा. उन्होंने साबित किया कि सच्चाई और प्यार बदलाव की सबसे मजबूत ताकत हो सकती है.

# गांधी के जीवन की समयरेखा

1869 मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर को भारत के पोरबंदर में हुआ

1883 गांधी और कस्तूरबा का विवाह

1893 गांधी कानून का अभ्यास करने के लिए दक्षिण अफ्रीका पहुंचे

1894 गांधी ने भारतीयों के हित के लिए नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की

1904 गांधी ने डरबन के पास "फीनिक्स सेटलमेंट" शुरू किया, और "इंडियन ओपिनियन" साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की

1906 गांधी ने भारतीयों से एक अनुचित कानून के विरोध में पंजीकरण न करके असहयोग का अभ्यास करने का आग्रह किया

1909 गांधी ने जोहान्सबर्ग के पास "टॉल्स्टॉय फार्म" की शुरुआत की

1915 गांधी ने भारत में साबरमती नदी के तट पर "सत्याग्रह आश्रम" खोला

1919 गांधी ने अनुचित कानूनों के खिलाफ हड़ताल का आयोजन किया. 13 अप्रैल को अमृतसर शहर में निर्दोष भारतीयों का नरसंहार हुआ

1920 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने गांधी के अहिंसक असहयोग अभियान को अपनाया

1922 गांधी को गिरफ्तार किया गया और राजद्रोह के आरोप में जेल भेजा गया

1930 गांधी ने अनुचित सरकारी नमक अधिनियमों के विरोध में नमक मार्च का नेतृत्व किया

1931 गांधी लंदन में गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया

1942 गांधी ने "भारत छोड़ो" आंदोलन शुरू किया

1944 गांधी की पत्नी कस्तूरबा का 22 फरवरी को निधन

1947 भारत 15 अगस्त को स्वतंत्र घोषित किया गया

1948 गांधी की 30 जनवरी को हत्या कर दी गई

समाप्त